साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 27, दिसम्बर(द्वितीय), 2017

एक कविता आज भी

मुझे तेरी याद दिलाती है, एक कविता आज भी,
अंखियों से नींद उड़ाती है, एक कविता आज भी।
कलम उठाने को विवश कर जाती है, एक कविता आज भी,
और सब कुछ कह जाना चाहती है, एक कविता आज भी।।

मेरे सुख–दुःख की साथी थी, एक कविता तब कहीं,
बचपन की चिर–सहेली थी, एक कविता तब कहीं।
मेरे चोरी की सजा पाती थी, एक कविता तब कहीं,
और एक अनजाना अहसास जगाती थी, एक कविता तब कहीं।।

कविता की यही कहानी थी, कि वो मेरे सपनों की रानी थी।
सारे गर्ल्स–हॉस्टल में, केवल वही मेरी दीवानी थी।।
शिकवा है जिंदगी से, की कविता मेरी हो न सकी।
मान समाज का रखा जरूर, मन से और की हो न सकी।।
आज जिंदगी के दीये का सारा तेल है जल चुका।
बत्ती रह–रहकर भभकतीं है और मैं बिस्तर पर पड़ा।।

इतने में क्या देखता हूँ , सामने खड़ी है मेरी कविता।
उठना चाहता, पर उठ नहीं पाता।।
कुछ बोलना चाहता, पर बोल नहीं पाता।
तभी और करीब आती है मेरी कविता।।
मुझे गले लगाती है मेरी कविता।।
हमारे सफेद बाल बन गये हो बादल,
ओट में बहती अश्रुधारा।
यही तो सच्चा प्रेम है राही, जो था कविता से हमारा
आगे रहे या ना रहे, रहेगी एक कविता कल भी।
आंखों से नींद उड़ाएगी, एक कविता कल भी।।
फिर कलम उठाने को बाध्य कर जाएगी, एक कविता कल भी।
और सब कुछ कह जाना चाहेगी, एक कविता कल भी।।

कृपया अपनी प्रतिक्रिया sahityasudha2016@gmail.com पर भेजें